

1
क

9
4
21

वाही वारील उधर प्रविष्टा गरी का रस (गन्ध)
की समस्त मायना सिंगर 4.6.21 को पेडा
है। क

4
6
21

कुरुक्षेत्र फरिफत अतिवक्तमान् अन्तरीका
ने नरद अन्त विष हुअरहे। फरिफत
कलना में दि० 13:82 को पेडा होवे।

13
21

मायना पेडा हुवे। वाही व उधर अतिवक्तमान् उधर अतिवक्तमान्।
वाह-2 कायज ग्यावे गडे (कोडे अन्तरीक गडे) (वाही व उधर
अतिवक्तमान् ती कुरुक्षेत्र में वाह व उधर अतिवक्तमान् व उधर-
दीवरी में खादिका अतिवक्तमान् है। मायना फेरिल सुगन्ध
होकर उधर ले कर है उधर वाह अन्तरीक अतिवक्तमान्।

क

